समाधि भक्ति
(शतक)

रचयिता

शास्त्रकवि श्रमणाचार्य विभवसागर मुनि

प्रकाशक

आचार्य विभवसागर श्रमण श्रुत संस्थान

कृति – समाधि भक्ति (शतक)
शुभाशीष – युगप्रतिक्रमण प्रवर्तक!
यति सम्मेलक!
सूत्राचार्य गणाचार्य
श्री विरागसागर जी महाराज
भाषा – हिन्दी
रचयिता – सारस्वतकवि, शास्त्रकवि
श्रमणाचार्य श्री 108 विभवसागर मुनिराज
रचना वर्ष – 2004 से 2017
प्रकाशन प्रसंग – श्री षट्खण्डागम सिद्धान्त एवं
समयसार अध्यात्मवाचना 2017
श्रुत पंचमी ज्ञान महोत्सव
विदिशा (म.प्र.)
प्रकाशक – आचार्य श्री विभवसागर श्रमण श्रुत संस्थान
पुण्यार्जक – टी.के. वेद,
इन्दौर
प्राप्ति स्थान –
1. सौरभ जैन
126-सी, अर्जुन नगर, गोपालपुरा बाईपास
जयपुर (राजस्थान)
मो. : 9829178749
2. सन्मति जैन
जैन चश्मा घर, परकोटा, सागर (म.प्र.)
मो. : 9425462997
3. पुण्यार्जक परिवार
4. विकास ऑफसेट, भोपाल
मुद्रक – विकास ऑफसेट प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स
45, सेक्टर-एफ, औद्योगिक क्षेत्र,
गोविन्दपुरा भोपाल (म.प्र.)
मो. : 9425005624, 0755-2601952

परम पूज्य गणाचार्य
श्री विरागसागर महाराज
का शुभाशीष

पावन पुनीता बोधि के फलस्वरूप रत्नत्रय मण्डित, वीतराग निर्विकल्प धर्मध्यान ही समाधि है जिसे साधु जन अहर्निश करते हैं और अपनी आत्मा की शुद्ध चित् चमत्कार रूप शुद्धात्म की अनुभूति को प्राप्त करते हुए जीवन के अंतिम दिनों में एवं क्षणों में काय कषाय का लेखन करते हुए मरणको ही महा महोत्सव बनाते हैं।

सारस्वत कवि आचार्य श्री विभवसागर जी ने अत्यंत लग्न और मेहनत से आगम ग्रन्थों का मंथन कर ''समाधि शास्त्र'' नामक ग्रंथ का प्रणयन किया है। अवश्य ही उनकी यह कृति स्व-पर कल्याण में सहयोगी बनेगी। मेरा उन्हें उनके इस पवित्र कार्य के लिये शुभाशीष....

स्वगत

प्रस्तुत ग्रन्थ ''समाधि शास्त्र' ' स्वोपज्ञ प्रवचनात्मक टीका ग्रन्थ है। सात वर्ष पूर्व कुंथलगिरि एवं श्रवणबेलगोला में रचित स्व रचना ''समाधि भक्ति'' पर बुन्देलखण्ड की धर्म प्राण नगरी बण्डा एवं सागर में 2011 में ग्रीष्म कालीन वाचना के समय हुए प्रवचन तथा लेखन कार्य का महत्वपूर्ण प्रतिफल है।

''समाधि भक्ति'' मैं समागत गूढ रहस्यों का उद्घाटन करने वाला, आगम, अध्यात्म, सिद्धान्त, ज्योतिष, रिष्ट, धर्मग्रन्थ, गुरुपदेश, जिन प्रवचन, शास्त्र स्वाध्याय और आत्म चिंतन की उपलब्धि का सफलतम संचयकोश यही ''समाधि शास्त्र''है।

कालजयी अमर भक्ति काव्य रचना ''समाधि भक्ति'' जब लक्ष-लक्ष कण्ठों में सादर स्थान पा चुकी है। जब आवश्यक और अनिवार्य था कि रचयिता अपने हार्दिक भावों को सरलतम रीति से पाठकों तक पहुचाये। यही भावना उद्भूत हुई, फलश्रुति शास्त्र रूप में आपके कर कमलों में संपूजित है।

यदि ''समाधि भक्ति'' बीज है, तो ''समाधि शास्त्र'' उत्तम वृक्ष है। यदि ''समाधि भक्ति'' पुष्प है, तो ''समाधि शास्त्र'' फल है। यदि ''समाधि भक्ति'' इक्षु दण्ड है, तो यह शास्त्र इक्षु रस है। मेरे प्राणों में गहराई से बसी, सर्व आत्मप्रदेशों में व्याप्त यह अमर रचना मुझे समाधि भाव प्रदान करती हुई, समाधिमरण में सहायक बनें। इस मंगल मनीषा के साथ - अथक अकथनीय कठोर परिश्रम का श्रीफल

''समाधि शास्त्र'' आपके स्वाध्याययोग्य कर कमलों में सादर सविनय समर्पित...।

शुभ हो।

आशीर्वचन

समाधि शास्त्र ग्रन्थ रचना के शुभ अवसर पर जिनका आशीर्वाद हमें निरन्तर मिलता रहा ऐसे मेरे दीक्षा-शिक्षा गुरु परम पूज्य गणाचार्य श्री विरागसागर जी सदा सन्मार्ग प्रदान करें। मैं उनके तीर्थपूत श्री चरणों में भक्ति भाव से नमन करता हुआ भावना भाता हूँ । आप मुझे समाधि लाभ प्रदान करें।

संघस्थ श्रमण श्री आचरण सागर मुनि श्री अमृतसागरमुनि, क्षुल्लक अध्यात्म सागर जी एवं सेवाधर्म ही जिनका प्राण और प्रण है, ऐसे संघस्थ समस्त भैया, बहिनें साधुवाद की सुपात्र है। जिनकी कुशल सेवाएँ यथा समय मिलती रहीं। लेखनकार्य में बहिन रानी जैन पाटन टीकमगढ़ का श्रम प्रशंसनीय है जिन्होंने महत्वपूर्ण प्रवचन सी.डी. से सुनकर आलेखित किए तथा श्रीमती उमंग जैन (शिक्षिका) ने प्रुफ संशोधन कार्य में योगदान दिया।

सुर्य का कार्य कमलों को खिला देना हैं, किन्तु खुशबू को बिखेरना तो बहारों का कार्य है ऐसे ही शास्त्र रचना उपरांत आप तक इस सुरभि को पहुँचाने वाले श्रुत प्रेमी गुरु भक्त परिवार के लिए शुभाशीर्वाद। प्रकाशन कार्य में श्री सौरभ जैन (मंत्री), आलोक अजमेरा (सहमंत्री), श्री दि. जैन मुनि सेवा संघ, जयपुर का प्रयास रहा जिसके फलस्वरूप यह शास्त्र

प्रकाशित होकर आपके कर कमलों में शोभायमान है। इस ज्ञान यज्ञ अनुष्ठान के शास्त्र प्रकाशन में श्री बसन्त जैन श्री सरस्वती प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनर्स, जयपुर के स्वामी के लिए बहुत-बहुत शुभाशीर्वाद।

स्वाध्याय परम तप है अतः पाठकगण इस ग्रन्थ का स्वाध्याय कर उचित समालोचना प्रदान करें। सरस्वती देवी मुझे क्षमा करे तथा बोधि-समाधि प्रदान करें।

श्रुताराधक
श्रमणाचार्य विभवसागर मुनि

उत्तम क्षमा पर्व
19.09.2012
शक्तिनगर, जयपुर

मुख्य बिन्दु

1. विशेषता :

सम्पूर्ण भारत देश के प्राय: समस्त जिनालयों, समस्त चतुर्विध संघों एवं समस्त जैन परिवारों में प्रतिदिन रुचि पूर्वक पढ़ी जाने वाली आगमनिष्ट सर्वोत्तम, सरलतम सर्वोपयोगी आत्मकल्याणकारी महत्वपूर्ण कालजयी सुप्रसिद्ध अमर रचना ''समाधि भक्ति''

2. रचना उद्‌भव :

समाधि भक्ति इस अमर रचना का उद्‌भव मेरे हृदय में ही दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र कुंथलगिरि पर आचार्य श्री शान्तिसागर जी महाराज की समाधि स्थली चरण छतरी की परिक्रमा लगाते समय हुआ।

3. प्रकाशन :

समाधि भक्ति रचना का प्रथम प्रकाशन मेरी मौलिक कृति गोमटेस विधान में श्रवण बेलगोला बाहुबली महामस्तकाभिषेक के अवसर पर हुआ।

4. रचना स्थल :

समाधि भक्ति रचना के प्रमुख तीन स्थल हैं - 1. सिद्ध क्षेत्र कुंथल गिरि, 2. श्रवणबेलगोला, 3. कुण्डलपुर

5. रचनाकाल :

समाधि भक्ति रचना काल
5 जनवरी 2005 से 15 मार्च 2011 तक,
लगभग पाँच वर्ष दो माह ग्यारह दिन।

श्रमणाचार्य विभवसागर
का.कृ.अमा., वीर नि.सं. 2539
जयपुर, 2012

(प्रथम अधिकार)

तेरी छत्रच्छाया भगवन् !, मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।।

जिनवाणी रसपान करूँ मैं, जिनवर को ध्याऊँ ।
आर्यजनों की संगति पाऊँ, व्रत-संयम चाहूँ ।।
गुणीजनों के सद्गुण गाऊँ, जिनवर यह वर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।। 1।।
तेरी छत्रच्छाया......

परनिन्दा न मुँह से निकले, मधुर वचन बोलूँ ।
हृदय तराजू पर हितकारी, सम्भाषण तौलूँ ।।
आत्म-तत्त्व की रहे भावना, भाव विमल भर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।। 2।।
तेरी छत्रच्छाया......

जिनशासन में प्रीति बढ़ाऊँ, मिथ्यापथ छोड़ूँ ।
निष्कलंक चैतन्य भावना, जिनमत से जोड़ूँ ।।
जन्म-जन्म में जैनधर्म यह, मिले कृपा कर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।। 3।।
तेरी छत्रच्छाया......

मरण समय गुरु-पादमूल हो, सन्त समूह रहे ।
जिनालयों में जिनवाणी की, गंगा नित्य बहे ।।
भव-भव में सन्यास मरण हो, नाथ हाथ धर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।। 4 ।।

तेरी छत्रच्छाया......

बाल्यकाल से अब तक मैंने जो सेवा की हो ।
देना चाहो प्रभो ! आप तो, बस इतना फल दो ।।
श्वास-श्वास, अन्तिम श्वासों में, णमोकार भर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।। 5 ।।

तेरी छत्रच्छाया......

विषय कषायों को मैं त्यागूँ, तजूँ परिग्रह को ।
मोक्षमार्ग पर बढ़ता जाऊँ, नाथ अनुग्रह हो ।।
तन पिंजर से मुझे निकालो, सिद्धालय घर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।। 6 ।।

तेरी छत्रच्छाया......

भद्रबाहु सम गुरु हमारे, हमें भद्रता दो ।
रत्नत्रय संयम का शुचिता, हृदय सरलता दो ।।
चन्द्रगुप्त सी गुरु सेवा का पाठ हृदय भर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।। 7 ।।
तेरी छत्रच्छाया......

अशुभ न सोचूँ, अशुभ न चाहूँ, अशुभ नहीं देखूँ ।
अशुभ सुनूँ ना, अशुभ कहूँ ना, अशुभ नहीं लेखूँ ।।
शुभ चर्या हो, शुभ क्रिया हो, शुद्ध भाव भर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।। 8 ।।
तेरी छत्रच्छाया......

तेरे चरण कमल द्वय जिनवर ! रहे हृदय मेरे ।
मेरा हृदय रहे सदा ही, चरणों में तेरे ।।
पण्डित-पण्डित मरण हो मेरा, ऐसा अवसर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।। 9 ।।
तेरी छत्रच्छाया......

मैंने जो जो पाप किए हों, वह सब माफ करो ।
खड़ा अदालत में हूँ स्वामी, अब इंसाफ करो ।।
मेरे अपराधों को गुरुवर, आज क्षमा कर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।। 10।।

तेरी छत्रच्छाया......

दुःख नाश हों, कर्म नाश हों, बोधि-लाभ वर दो ।
जिन गुण से प्रभु आप भरे हो, वह मुझमें भर दों ।।
यही प्रार्थना, यही भावना, पूर्ण आप कर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।। 11।।

तेरी छत्रच्छाया......

(द्वितीय अधिकार)

तेरी छत्रच्छाया भगवन् !, मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।।

अहो अकिंचन मैं हूँ मेरा, इस जग में क्या है ?
मेरे गुण तो मेरे भीतर, बाहर में क्या है ।।
यह रहस्य परमात्मकला का, पूर्ण उजागर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।। 12 ।।
तेरी छत्रच्छाया......

मैं पवित्र हूँ मैं प्रसन्न हूँ, पूर्ण स्वस्थ हूँ मैं ।
ज्ञानवान हूँ ध्यानवान हूँ , आत्मस्थ हूँ मैं ।।
आत्मक्रिया चिन्तन मन्थन में, निज मन तत्पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।। 13 ।।
तेरी छत्रच्छाया......

बिन भोगे ही भव भोगों को, त्यागा धन्य वही ।
भोग बुरे लख जिनने त्यागे, वे सब धन्य मही ।।
मोह रहित जप, ज्ञान सहित तप, त्याग निरन्तर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।। 14 ।।
तेरी छत्रच्छाया......

भव-भव में मुनिराज बनूँ मैं, यही भावना है ।
भव-भव में जिनधर्म गहूँ मैं, यही भावना है ।।
बाल बह्मचारी मुनि होऊँ, रत्नत्रय वर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।। 15 ।।

तेरी छत्रच्छाया......

मैं तप धारूँ मैं श्रुत धारूँ, सम्यक् व्रत धारूँ ।
धर्मध्यान में रत होकर के, शुक्ल ध्यान धारूँ ।।
शुक्ल ध्यान में कर्म जलाऊँ, जाना शिवपुर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।। 16 ।।

तेरी छत्रच्छाया......

मैं कैसा हूँ केवलज्ञानी !, जैसा तुम जानो ।
मैं वैसा हूँ अंतर्यामी !, जैसा तुम मानो ।।
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, तुम अविनश्वर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।। 17 ।।

तेरी छत्रच्छाया......

उत्तम त्यागी वे हैं जिनने, अर्जन नहीं किया ।
मध्यम त्यागी वे हैं जिनने, अर्जित त्याग किया ।।
जघन्य त्यागी सौंप संपदा, सन्त दिगम्बर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।। 18 ।।

तेरी छत्रच्छाया......

भव अनन्त के भ्रमण चक्र को, आज रोकता हूँ ।
देव शास्त्र गुरुवर के चरणों, माथ टेकता हूँ ।।
अब निर्दोष तपस्या का फल, सिद्ध परम पद हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।। 19 ।।

तेरी छत्रच्छाया......

ना जाने कब तेरे दर से, चलना हो जाये ।
किस विधि फिर से दर्शन पाना, दुर्लभ हो जाये ।।
उत्तमार्थ प्रतिकर्म करूँ मैं, सर्व दोष हर लो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।। 20 ।।

तेरी छत्रच्छाया......

चन्द्रप्रभ भगवान हमारे, हमको चारित दो ।
चरण कमल की करूँ वन्दना, मन पवित्र कर दो ।।
श्री सम्मेद शिखर का दर्शन, हमको फिर-फिर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।। 21 ।।

तेरी छत्रच्छाया......

नंदीश्वर के दर्शन पाऊँ, पंचमेरू जाऊँ ।
श्री विदेह में तीर्थंकर के, समवशरण जाऊँ ।।
उड़ जाऊँ निर्वाण लक्ष्य तक, प्रभुवर वह पर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।। 22 ।।

तेरी छत्रच्छाया......

(तृतीय अधिकार)

तेरी छत्रच्छाया भगवन् !, मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।

एक मात्र जिनभक्ति आपकी, है समर्थशाली ।
दुर्गति रोधक सन्मति बोधक, महापुण्यशाली ।।
शाश्वत मोक्ष महल की चाबी, संस्तुति जिनवर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।। 23 ।।
तेरी छत्रच्छाया......

शील सहित नर भी मरता है, शील रहित मरता ।
धैर्य सहित नर भी मरता है, धैर्य रहित मरता ।।
शील सहित हो धैर्य सहित हो, वह समाधि वर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।। 24 ।।
तेरी छत्रच्छाया......

ज्ञान भावना दर्श भावना, चरित भावना हो ।
ये तीनों तो आत्मरूप हैं, आत्मभावना हो ।।
रत्नत्रय की बहे त्रिवेणी, प्रतिपल संवर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।। 25 ।।
तेरी छत्रच्छाया......

अरिहंतों को नमन हमारा, सिद्ध नमन मेरा ।
सूरि पाठक साधुजनों को, नित्य नमन मेरा ।।
पंच परम परमेष्ठी हमारे, पंच पाप हरलो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।। 26 ।।

तेरी छत्रच्छाया......

अरिहंतों का पहला मंगल, सिद्धों का दूजा ।
साधुजनों का तीजा मंगल, धर्म कहा चौथा ।।
चारों मंगल मेरा जीवन, मंगलमय कर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।। 27 ।।

तेरी छत्रच्छाया......

अरिहंतों का पहला उत्तम, सिद्धों का दूजा ।
साधुजनों का तीजा उत्तम, धर्म कहा चौथा ।।
चारों उत्तम मेरा जीवन, सर्वोत्तम कर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।। 28 ।।

तेरी छत्रच्छाया......

अरिंहतों की पहली शरणा, सिद्धों की दूजी ।
साधुजनों की तीजी शरणा, धर्म शरण चौथी ।।
चारों शरणा भय दुःख हरणा, मुझे शरण रखलो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।। 29 ।।

तेरी छत्रच्छाया......

गुरु से मुझको मिला है कितना, क्यों इतना सोचूँ ।
मैंने कितना किया समर्पण, बस इतना सोचूँ ।।
सेवा और समर्पण प्रतिपल, बढ़ते क्रम पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।। 30 ।।

तेरी छत्रच्छाया......

संयम भाव जगाना गुरुवर ! काम तुम्हारा है ।
संयम पालन करना गुरुवर ! काम हमारा है ।।
अब तो प्रतिपल प्रतिपग मेरा, संयम पथ पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।। 31 ।।

तेरी छत्रच्छाया......

संयम पथ निर्बाध बनाओ, मेरे गुरुवर जी ।
मोक्षमहल तक साथ निभाओ, मेरे प्रभुवर जी ।।
उपसर्गों में बाधओं में, कभी नहीं डर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।। 32 ।।

तेरी छत्रच्छाया......

चलते-फिरते प्राण हमारे, श्री गुरुवर मेरे।
धर्मपिता की गोद में खेले, हम बालक तेरे।।
धर्मपुत्र के पालन में तुम, गुरु गोवर्द्धन हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।। 33 ।।

तेरी छत्रच्छाया......

(चर्तुथ अधिकार)

तेरी छत्रच्छाया भगवन् !, मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।।

चिंतन दे गुरु हृदय दिया है, श्रुत दे कान दिए।
राह दिखाकर आँखे दी हैं, संयम प्राण दिए।।
ऐसे गुरु-पद चिदानंद का, झरना झर झर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।। 34 ।।
तेरी छत्रच्छाया......

मैं क्या चाहूँ नाथ आपसे, कहाँ समाधि हो।
जहाँ हमारे गुरु विराजें, वहाँ समाधि हो।।
पार्श्वनाथ का समवशरणथल, श्री नैनागिर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।। 35 ।।
तेरी छत्रच्छाया......

पुण्यार्जन की सरल विधि है, अनुमोदन करना।
शुभकार्यों का सम्पादन कर, पुण्य कोष भरना।।
आराधन की अमर पताका, मेरे कर में हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।। 36 ।।
तेरी छत्रच्छाया......

यह रत्नत्रय परम-सम्पदा, सबको उपयोगी।
जो रत्नत्रय पालन करते, दुर्लभ वह योगी।।
भेदज्ञान पौरुष प्रकटाऊँ, शुद्ध चिदम्बर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।। 37 ।।

तेरी छत्रच्छाया......

जौ लौं जरा रोग ना आये, तौ लौं तप कर लूँ।
ओम् नमः अर्हम् सोहं का, जप ही जप कर लूँ।।
महामंत्र की महाशक्तियों, से मन मंत्रित हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।। 38 ।।

तेरी छत्रच्छाया......

उद्गम थल से जैसे सरिता, पतली सी बहती।
सागर तट लौं बहती जाती, बढ़ती ही बढ़ती।।
इसी तरह मेरा आतम-गुण, बढ़ते क्रम पर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।। 39 ।।

तेरी छत्रच्छाया......

भाव शुद्धि ही शुभ समाधि है, भाव शुद्ध कर लूँ।
जैसा श्रम हो वैसा क्रमशः, कम अहार कर लूँ।।
धर्मध्यान में रहे लीनता, तप अभ्यन्तर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।। 40।।

तेरी छत्रच्छाया......

चार बरस लौं कायक्लेश तप, आगे रस तजना।
चार बरस लौं रस तज तज कर, रसना वश करना।।
शेष उम्र तप भात मठा ले, जल पानक पर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।। 41।।

तेरी छत्रच्छाया......

तेरे गुण की याद दिलातीं, तेरी प्रतिमाएँ।
इसीलिए हम आकर करते, दर्शन पूजाएँ।।
वीतराग भावों की जननी, प्रतिमा जिनवर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।। 42।।

तेरी छत्रच्छाया......

बादल बरसें वन खण्डों में, तरु पतियाँ होती।
पुण्योदय से राजकोश में, नव निधियाँ होती।।
पुण्यफला अरिहंत-परम-पद, आप जिनेश्वर दो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।। 43 ।।

तेरी छत्रच्छाया......

समतामय हो तपो-भावना, तत्त्व-भावना हो।
समतामय एकत्व-भावना, सत्त्व-भावना हो।।
समतामय हो धैर्य-भावना, व्रत समता धर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।। 44 ।।

तेरी छत्रच्छाया......

(पंचम अधिकार)

तेरी छत्रच्छाया भगवन् !, मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।।

प्रतिक्रमण से आत्मशुद्धि हो, श्रुत से बुद्धि बड़े।
सामायिक से बड़े विशुद्धी, तप से ऋद्धि बड़े।।
आत्म-साधना बढ़ती जाये, मन पवित्रतर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।। 45 ।।
तेरी छत्रच्छाया......

पापास्रव कारक भावों को, नहीं उपजने दूँ।
गुरु निन्दा के बीज हृदय में, नहीं पनपने दूँ।।
मानस-विनयाचार हमारे, अन्तर्मन भर दो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।। 46 ।।
तेरी छत्रच्छाया......

गुरु को प्रिय गुरु को हितकर हो, वही भाव भाऊँ।
श्री गुरु के अनुकूल चलूँ मैं, गुरु पद ही ध्याऊँ।।
गुरु-कृपा का पात्र बनूँ मैं, विनय गुणोत्तर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।। 47 ।।
तेरी छत्रच्छाया......

ज्यों चलनी में नहीं ठहरता, भरा हुआ पानी।
चंचल-मन में नहीं ठहरता, यम संयम ज्ञानी।।
श्रद्धा श्रुत, दृढ़ संकल्पों से, यह मन सुस्थिर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।। 48।।

तेरी छत्रच्छाया......

कर्मोदय की पराधीनता, हित कैसे साधूँ।
चारों आराधन भी निर्मल, कैसे आराधूँ।।
मृत्युरूप इस वज्रपात पर, विजय अनुत्तर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।। 49।।

तेरी छत्रच्छाया......

शुभ-भावों में नित-निमित्त हैं, जिनवर प्रतिमाएँ।
अतः उन्हीं का आलम्वन लें, जिन महिमा गाएँ।।
अंत समय तक मेरे सम्मुख, प्रतिमा जिनवर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।। 50।।

तेरी छत्रच्छाया......

चंचल मन है पवन वेग सा, कौन दिशा जाये?
चंचल मन है दुष्ट अश्व सा, कहाँ गिरा आये?
चंचल मन के वशीकरण को, नित भक्तामर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।। 51।।
तेरी छत्रच्छाया......

देख न पाया, सुन ना पाया, बोल नहीं पाया।
तृष्णा-सरिता में डूबा मन, हित ना कर पाया।।
मन संयम का महामंत्र गुरु, कानों में भर दो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।। 52।।
तेरी छत्रच्छाया......

सम्यग्दर्शन में निमित्त हैं, पावन जिनवाणी।
सूरी, पाठक, साधु संघ वा, गुरु सम्यग्ज्ञानी।।
सम्यग्दर्शन लेकर जाऊँ, यही धरोहर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।। 53।।
तेरी छत्रच्छाया......

मनोवती सी दर्श-प्रतिज्ञा, नाथ! अटल करलूँ।
पद्मरथी सम उपसर्गों को, सह आगे बढ़लूँ।।
बाहुबली भगवान आप सी, मूर्ति मनोहर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।। 54।।

तेरी छत्रच्छाया......

राग द्वेषमय अशुभ भाव कर, जग हिम्मत हारा।
मन के रोके रुक जाता है, राग-द्वेष सारा।।
निश्चल मन से महामंत्र का, जाप जिनेश्वर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।। 55।।

तेरी छत्रच्छाया......

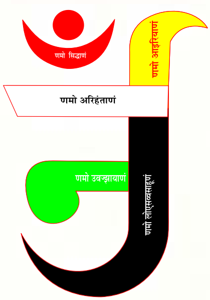

(षष्ठम अधिकार)

तेरी छत्रच्छाया भगवन् !, मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।।

यथा काल हो, यथा देश हो, यथा संघ होवे।
वैसा सन्त नियोगी पाकर, मन प्रमुदित होवे।।
यत्नाचारी-सन्त-शरण में, आत्म सर्मपण हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।। 56 ।।
तेरी छत्रच्छाया......

आप विरागी हम अनुरागी, सब सहभागी हों।
नैया पार लगाने वाले, यति बड़भागी हों।।
उद्योतन, निर्वाहन, साधन, शुभ संस्तर पर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।। 57 ।।
तेरी छत्रच्छाया......

सर्व संघ से हाथ जोड़कर?क्षमा माँगता हूँ।
गुरु साक्षी में सर्व पाप को, आज त्यागता हूँ।।
क्षमा मूर्ति गुरुदेव हमारे, क्षमा-भाव भर दो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।। 58 ।।
तेरी छत्रच्छाया......

श्रावक-व्रत या साधु-व्रत धर, जो समाधि करता।
सुनो समाधि के फल से वह, स्वर्गों में रहता।।
संकल्पों से सुरकल्पों में, देव अनुत्तर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।। 59।।

तेरी छत्रच्छाया......

जो समाधि में रुचि रखता है, वह समाधि पावे।
दर्शन-ज्ञान-चरित की महिमा, तन-मन से भावे।।
सल्लेखन का समाचार पा, तन-मन हर्षित हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।। 60।।

तेरी छत्रच्छाया......

शल्य रहित हो क्षपक राज, बन सल्लेखन कर लूँ।
निर्मल रत्नत्रय पालन कर, शुद्ध भाव धर लूँ।।
जिज्ञासा के समाधान तुम, हर प्रश्नोत्तर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।। 61।।

तेरी छत्रच्छाया......

जहाँ-जहाँ हो सन्त समाधि, वहाँ-वहाँ जाऊँ।
क्षपक राज के दर्शन करके, अनुमोदन भाऊँ।।
श्रेष्ठ समाधि करने वाला, नर तीर्थंकर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।। 62।।
तेरी छत्रच्छाया......

विराग सागर गुरुवर कहते, निभो निभाओ जी।
सन्मति सागर गुरुवर कहते, तपो-तपाओ जी।।
गुरु आज्ञा को शिरोधारना, आतम हितकर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।। 63।।
तेरी छत्रच्छाया......

कलिकाल यह पापकाल है, हृदय कलुषता है ।
सम्यक् श्रोता सम्यक् वक्ता, की दुर्लभता है ।।
प्रभावशाली जिन शासन की, प्रभुता सुखकर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।64।।
तेरी छत्रच्छाया......

दया दमन अरु त्याग समाधि, चार थंभ वाला ।
नय प्रमाण युत श्री जिन शासन, सबको सुखवाला ।।
तेरा मत जिन! अद्वितीय मत, सदा शुभंकर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।65।।

तेरी छत्रच्छाया......

द्रव्य क्षेत्र का काल भाव का, निज प्रभाव पड़ता ।
जड़ का जड़ पर जड़ चेतन पर, चेतन पर जड़ का ।।
यह निमित्त अरु उपादान की, चर्चा हितकर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।66।।

तेरी छत्रच्छाया......

(सप्तम अधिकार)

तेरी छत्रच्छाया भगवन् !, मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।।

निर्विकल्प निर्द्वन्द रहूँ मैं, यही भावना है ।
शुद्धातम का संवेदन ही, आत्म साधना है।।
समता समता समता धरना, भाव निरन्तर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।67।।
तेरी छत्रच्छाया......

भावों में निर्मलता रखना, श्रेष्ठ सफलता है ।
निर्मलता में शुक्ल ध्यान हो, शिवपद मिलता है ।।
निर्विकार चैतन्य आत्मा, स्वयं शिवंकर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।68।।
तेरी छत्रच्छाया......

समता मंदिर ! स्वातम सुन्दर ! शुद्धातम योगी !
सन्त दिगम्बर! शुद्ध चिदम्बर! समरस सुख भोगी।।
सर्व साधु जयवंत रहे नित, मंगलमय स्वर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।69।।
तेरी छत्रच्छाया......

नियम न तोड़ूँ , धर्म न छोड़ूँ, पाप नहीं जोड़ूँ ।
संकल्पों से मुँह ना मोड़ूँ, मोह नहीं ओढ़ूँ।।
यही धारणा वीर प्रतिज्ञा, आतम अन्दर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।70।।

तेरी छत्रच्छाया......

लज्जा, भय, गारव को तज के, निश्छल हो करके ।
अपने दोष निवेदन करलूँ, गुरु चरणों रहके ।।
मात-पिता सम गुरु हमारे, सभी दोष हर लो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।71।।

तेरी छत्रच्छाया......

प्रियधर्मा हो दृढ़ धर्मा हो, धर्मातम धीरु ।
संवेगी वैरागी त्यागी, सदा पाप भीरु ।।
अभिप्रायों को जानने वाला, यति निर्यापक हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।72।।

तेरी छत्रच्छाया......

अरे प्रमाणाभासों द्वारा, नहीं ठगा जाऊँ ।
कौन प्रवक्ता क्या प्रमाण है, सही समझ पाऊँ ।।
''सम्यग्ज्ञान प्रमाणम्'' गुरुवर, न्याय भास्कर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।73।।
तेरी छत्रच्छाया......

मोक्षमार्ग तो एक मार्ग है, किस विधि कौन चले ।
पता नहीं चलने वाले को, क्या-क्या कहाँ मिले ।।
चुनना, चलना, चलते रहना, यह साहस भर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।74।।
तेरी छत्रच्छाया......

अन्तर आतम के अन्तर में , क्या अन्तर पड़ता ।
वंदन बंधन बाधाओं में, समता ही समता ।।
इस विधि ही परमात्म बनूँगा, लक्ष्य सफल कर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।75।।
तेरी छत्रच्छाया......

छेदा जाऊँ, भेदा जाऊँ, या बाँधा जाऊँ ।
जहाँ-तहाँ ले जाया जाऊँ, या खाया जाऊँ ।।
तो भी मेरा नाश नहीं है, दृढ़ श्रद्धा भर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।76।।

तेरी छत्रच्छाया......

किसी के माथे सिगड़ी जलती, सिंह प्राण खाये ।
किसी-किसी को गरम-गरम, आभूषण पहराये ।।
मैं अविनाशी अमर आत्मा, शुभ चिंतन भर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।77।।

तेरी छत्रच्छाया.....

(अष्ठम अधिकार)

तेरी छत्रच्छाया भगवन् !, मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।।

सिद्ध अनंतानंत हुए है, क्या-क्या सह करके ।
पीड़ाओं में पूजाओं में, दृढ़ समता धरके ।।
पीड़ा भी परमात्म बनाती, सत्य कथन कर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।78।।
तेरी छत्रच्छाया......

जैन न्याय सिद्धान्त शास्त्र पर, होवे दृढ़ श्रद्धा ।
कोई नहीं किसी को देता, कर्म बिना बाधा ।।
परमातम का यह उपाय भी, आतम अन्तर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।79।।
तेरी छत्रच्छाया......

खेतों में हरियाली होवे, जन-जन खुशहाली ।
रक्षाबन्धन पर्यूषण हो, घर-घर दीवाली ।।
तीन लोक के सब जीवों में, शान्ति-शान्ति भर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।80।।
तेरी छत्रच्छाया......

धर्म राह में पाप कमाया, शन्ति मिले कैसे ?
गुणी जनों में दोष लगाया, शान्ति मिले कैसे ?
सकल कर्म क्षय करने वाला, धर्म निरन्तर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।81।।

तेरी छत्रच्छाया......

चित्त शुद्धि से धर्म ध्यान कर, मन को शान्ति मिले ।
वचन शुद्धि से भक्ति पाठ कर, वाचा शान्ति मिले।।
णमोकार से काय शुद्धि कर, निर्विकार कर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।82।।

तेरी छत्रच्छाया......

धन्य-धन्य हो जाये मेरा, यह नर भव पाना !
धन्य धन्य हो जाये मेरा, सन्त शरण आना ।।
ओम् नमः सिद्धाय जपूँ में, जय सिद्धीश्वर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।83।।

तेरी छत्रच्छाया......

गुण सुमरण से गुण धारण में, रुचि पैदा होती ।
गुण रुचि ही गुणवान बनाती, दृढ़ श्रद्धा बोती ।।
श्रद्धा बढ़ते वात्सल्य गुण, हर इक घर में हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।84।।
तेरी छत्रच्छाया......

कस्तूरी की गंध शपथ ले, ऐसा कब होता ।
वीतराग को कर्म बन्ध हो, ऐसा कब होता ।।
वीतरागता का अनुयायी, शुभ से शुभतर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।85।।
तेरी छत्रच्छाया......

आगे कदम बढ़ाकर भगवन् ! पीछे नहीं हटूँ ।
मोक्ष मार्ग में वीर पुत्र सा, कृत संकल्प डटूँ ।।
सदा श्रमण सर्वत्र संयमी, भाव उच्चतर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।86।।
तेरी छत्रच्छाया......

जल में आये, थल में आये, या नभ में आये ।
कौन बताये किसका अन्तिम, समय कहाँ आये ।।
जब भी आये जहाँ भी आये, शिर पर गुरु कर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।87।।
तेरी छत्रच्छाया......

निज स्वरूप में लीन हुआ है, जिसका मन प्यारे ।
उसके चरणों में नतमस्तक, भुवनत्रय सारे ।।
समय समय में समयसार का, संवेदन भर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।88।।
तेरी छत्रच्छाया......

(नवम अधिकार)

तेरी छत्रच्छाया भगवन् !, मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।।

ज्यों कमलों को करें प्रफुल्लित, रवि किरणावलियाँ।
त्यों भव्यों को करें प्रफुल्लित, गुरु वचनावलियाँ ।।
प्रसन्नता और प्रीति झरेगी, प्रवचन गुरुवर दो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।89।।
तेरी छत्रच्छाया......

मैं एकाकी अरस अरूपी, सिद्ध स्वरूपी हूँ ।
दर्शन ज्ञान मयी शुद्धातम , चिद् चिद्रूपी हूँ ।।
निर्विकल्प का निजानन्द रस, निज में निर्भर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।90।।
तेरी छत्रच्छाया......

ये मत सोचूँ जीवन पथ में, बाधा ना आयें ।
इतना सोचूँ बाधाओं पर, कैसे जय पायें ।।
जितनी-जितनी समता जागे, उतना संवर हो।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।91।।
तेरी छत्रच्छाया......

कोई फूल चढ़ाये चरणों, पूजा पाठ रचे ।
कोई सर्प गले में डाले, या अपशब्द कहे ।।
उन दोनों में समता धारी, सन्त मुनीश्वर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।92।।

तेरी छत्रच्छाया......

पर द्रव्यों से मोह लगाया, किस विध खोऊँगा ।
ना ये मेरे ना मैं इनका, हुआ न होऊँगा ।।
आत्म द्रव्य मैं हूँ मेरा है, समयसार स्वर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।93।।

तेरी छत्रच्छाया......

तजूँ मोह को, तजूँ मोह को, रहूँ ज्ञान रसिया ।
पर से कुछ सम्बन्ध नहीं मैं, सिद्धालय बसिया ।।
यही अटल सिद्धान्त हमारा, शाश्वत दृढ़तर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।94।।

तेरी छत्रच्छाया......

सन्त साधुओं द्वारा सेवित, भूमि तीर्थ कही ।
तो फिर बोलो क्षपकराज तुम ! कैसे तीर्थ नही ।।
निज स्वरूप का वन्दन करके, सभी तीर्थ कर लो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।95।।

तेरी छत्रच्छाया......

सर्व जगत के जीव अनंता, मेरे उपकारी ।
यही भावना मित्र भावना, हो मंगलकारी ।।
रागद्वेष है दुःख का कारण, अतः इसे हर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।96।।

तेरी छत्रच्छाया......

मैंने मोक्षमहल पाने का, लक्ष्य बनाया है ।
माना मोक्षमहल की सीढ़ी, गुरुपद छाया है ।।
ज्ञान रूप जल तप का भोजन, मंगल पथ चर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।97।।

तेरी छत्रच्छाया......

जगत भरा है आलम्बन से, धर्म ध्यान ध्याओ ।
शब्द राशि का पार नहीं है, गुण गाथा गाओ ।।
मन की चिन्ता विपदा पीड़ा, सब छू मन्तर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।98।।

तेरी छत्रच्छाया......

जितना सुख दे जिनवाणी माँ, उतना सुखी रहूँ ।
पाप बीज सुख कभी न चाहूँ, चाहे दुखी रहूँ ।।
श्रुतानन्द का भोगी योगी, जम्बू मुनिवर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।99।।

तेरी छत्रच्छाया......

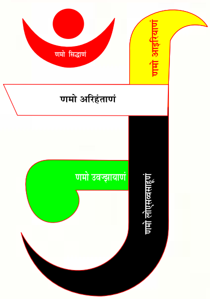

(दशम अधिकार)

तेरी छत्रच्छाया भगवन् !, मेरे शिर पर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो।।

अचल मेरु भी विचलित होवे, धरा उलट जावे ।
किन्तु इन्द्र भी मुनि के मन को, नहीं पलट पावे।।
साम्य भाव का ऐसा वैभव, जीवन में भर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।। 100 ।।
तेरी छत्रच्छाया......

जो चाहो तुम पा सकते हो, कामधेनु तप है ।
तप ही चिन्तामणि रत्न है, अलंकार तप है ।।
मैं अज्ञान अँधेरे मैं हूँ, तपो दीप धर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।। 101 ।।
तेरी छत्रच्छाया......

किस विधि भव को पार करूँ मैं, गुरु को तृप्ति मिले ।
संघ परिश्रम सफल करूँ मैं, सब का चित्त खिले ।।
दिग्-दिगन्त में, श्रमण संघ की, कीर्ति मनोहर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।। 102 ।।
तेरी छत्रच्छाया......

कर्मोदय की गति विचित्र है, कब क्या हो जाये ।
कैसा कर्म उदय में आकर, कब क्या कर जाये ।।
कर्म विपाकी चिंतन करके, यह मन संस्थिर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।103।।

तेरी छत्रच्छाया......

मेरे कारण जिनशासन की, लाज नहीं जाये ।
मेरे कारण श्रमण संघ पर, आँच नहीं आये ।।
परिणामों की रक्षा करना, वीर जिनेश्वर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।104।।

तेरी छत्रच्छाया......

अब भी कोई हो उपाय तो, प्रभुवर बतलाओ ।
जिनशासन की प्राण प्रतिष्ठा, आप बचा जाओ ।।
कैसा भी दुर्बन्ध किया हो, शीघ्र विनश्वर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।105।।

तेरी छत्रच्छाया......

पीड़ा भी परमात्म बनाती, सम्यग्दृष्टि को ।
निन्दा भी अध्यात्म सिखाती, सम्यग्दृष्टि को ।।
निन्दा और प्रशंसाओं में, समरसता भर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।106।।

तेरी छत्रच्छाया......

शीश नवाकर गुरुआज्ञा को, मैं स्वीकार करूँ ।
जो- जो गुरुवर कहा आपने, वैसा नित्य करूँ ।।
स्वतः समाधि लाभ मिलेगा, शिष्य विनयधर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।107।।

तेरी छत्रच्छाया......

अज्ञानी की बात-बात में, है विकल्प कितने ?
अरे प्याज के छिलके भीतर, छिलके हैं जितने ।।
पर भावों में, नहीं उलझना, सब छू मन्तर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।।108।।

तेरी छत्रच्छाया......

ज्ञानी की हर बात-बात में, तत्त्व भेद कितने ?
ज्यों केले के पात-पात में केल पत्र उतने ।।
ज्ञानीजन की संगति पाकर, धर्म ध्यानधर हो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।। 109 ।।

तेरी छत्रच्छाया......

देव शास्त्र गुरु मुझे मिले हैं, तेरी शरणा में ।
गुरु विराग भी मुझे मिले हैं, तेरी करुणा में ।।
मिले साधना और समाधि यही विभव वर दो ।
मेरा अन्तिम-मरण-समाधि, तेरे दर पर हो ।। 110 ।।

तेरी छत्रच्छाया......